रख रही है और प्रौद्योगिकीय उन्नयन के साथ-साथ स्तर के कच्चे माल की उपलब्धता में सुधार लाने के माध्यम से उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को बढ़ाने के कदम उठा रही है। निर्यात बढ़ाने के उद्देश्य से सूती यार्न का उत्पादन कर रहे निर्यातोन्मुख एककों के लिए मानदंडों में ढील दी गयी है तथा निर्यातकों को क्रेता विक्रेता बैठकों और अंतर्राष्ट्रीय मेलों व प्रदर्शनियों में भाग लेने के लिए अत्यधिक उदारता का परिचय दें। मौजूदा नीतिगत ढांचे की पुनरीक्षा करने के लिए एक प्रोत्साहित किया जाता है। वित्तीय संस्थानों और बैंकों से अनुरोध किया जा रहा है कि वे सामान्यतया वस्त्र उद्योग के साथ-साथ निर्यातकों की ऋण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक विशेषज्ञ समूह गठित किया गया है जो कि उद्योग को धरट देने के लिए सिफारिशें करेगा।

## वस्त्र मिलों में रुग्णता

298. **श्री बलवंत सिंह रामूवालिया:**
**श्री वरजिन्दर सिंह:**

क्या **वस्त्र** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान कपड़ा मिलों में रुग्णता बढ़ जाने के कारण बंद होने वाली मिलों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है ;

(ख) यदि हां, तो अप्रैल, 1996 और मई, 1998 में क्रमशः बंद कपड़ा मिलों की संख्या क्या थी;

(ग) क्या यह भी सच है कि कपड़े के उत्पादन के लिए देश में कपास प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और श्रम-शक्ति का भी अभाव नहीं है; और

(घ) यदि हां, तो कपड़ा मिलों के निरंतर बंद होने के क्या कारण हैं?

**वस्त्र मंत्री (श्री काशीराम राणा):** (क) और (ख) 30.4.96 और 31.5.98 तक बंद पड़ी हुई सूचित की गई सूती/मानव निर्मित फाइबर वस्त्र मिलों की संख्या क्रमशः 195 और 254 थी।

(ग) वर्ष 1997-98 के दौरान कपास का उत्पादन लगभग 152.25 लाख गांठ था प्रत्येक गांठ 170 किग्रा०, जो कि इस समय पर्याप्त है। 31.3.98 तक की स्थिति अनुसार सूती/मानव निर्मित फाइबर वस्त्र मिलों की नामावलियों में लगभग 10 लाख कामगार थे।

(घ) यद्यपि कोई विशिष्ट कारण नहीं बताया जा सकता फिर भी वस्त्र मिलों के बंद होने के अनेक कारण माने जा सकते हैं जिनमें अप्रचलित प्रौद्योगिकी, अंतर्निविष्टियों की लागत में वृद्धि, समय पर तथा पर्याप्त कार्यशील, वित्त प्राप्त करने में कठिनाइयां, कुप्रबंध आदि शामिल हैं।

## वस्त्र मिलों में आर्थिक मंदी

299. **श्री धर्मपाल यादव:** क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या देश का कपड़ा उद्योग भयंकर आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहा है;

(ख) क्या सरकार व्यवसायियों को आर्थिक मंदी से बचाने के लिए कोई प्रभावी कार्यवाही कर रही है;

(ग) क्या सरकार कपड़ा उद्योग की उत्पाद-शुल्क संबंधी समस्या का समाधान करने का विचार रखती है; और

(घ) यदि हां, तो कब तक और यदि नहीं, तो उसके क्या कारण हैं?

**वस्त्र मंत्री (श्री काशीराम राणा):** दक्षिण-पूर्व एशियाई मुद्रा संकट विशेषतः वस्त्र निर्यात पर विपरीत प्रभाव के कारण, वस्त्र उद्योग में विकास कुछ हद तक काफी मंदा हुआ है।

(ख) से (घ) कच्चे माल की गुणवत्ता में सुधार, प्रौद्योगिकी के उन्नयन, वित्तीय समायोजन तथा ऋण के अपेक्षित प्रवाह को सुनिश्चित करने के माध्यम से सरकार द्वारा वस्त्र उद्योग की स्पर्धा को बढ़ाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।

## Import of Textile Products

300. SHRI SOLIPETA RAMACHANDRA REDDY: Will the Minister of TEXTILES be pleased to state: